मुद्रा के लाभ या उसके गुण
(Advantages or Merits of Money)

आर्थिक-सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मुद्रा का काफी महत्त्व है। देश की अर्थव्यवस्था के संचालन एवं आर्थिक विकास के लिए मुद्रा नितांत जरूरी है। मुद्रा के निम्नलिखित प्रमुख लाभ हैं।

1. उपभोग के क्षेत्र में (In the area of production)—उपभोक्ता मुद्रा के द्वारा ही अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करता है। सम-सीमांत उपयोगिता नियम का सहारा लेकर वह अपनी सीमित आय द्वारा अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करता है। मुद्रा द्वारा ही उपभोक्ता वस्तुओं की माँग करता है तथा इच्छित वस्तुओं को खरीदता है। मुद्रा द्वारा ही व्यक्ति अपने परिवार का खर्च पूरा करता है। इस तरह, मुद्रा पारिवारिक बजट का आधार है। साथ ही मुद्रा सबसे तरल साधन है, अत: मुद्रा उपभोक्ता को अपनी इच्छा के अनुसार वस्तुओं पर व्यय करने का अधिकार प्रदान करती है।

मुद्रा से लाभ

1. उपभोग के क्षेत्र मे
2. उत्पादकों को लाभ
3. विनिमय का आधार
4. वितरण के क्षेत्र में
5. राजस्व के क्षेत्र में
6. अन्य लाभ—(क) साख का आधार (ख) पूँजी-संचय एवं पूँजी-निर्माण का प्रोत्साहक (ग) विलंबित भुगतान का मापदंड (घ) आर्थिक प्रगति का सूचक (ङ) पूँजी एवं तकनीक के हस्तांतरण में सहायक एवं विदेशी व्यापार तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग का प्रोत्साहक

2. उत्पादकों को लाभ (Benefits to producers)—उत्पादकों का मुख्य उद्देश्य लाभ अर्जित करना होता है। वे मुद्रा के सहारे बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए श्रम-विभाजन तथा विशिष्टीकरण का प्रयोग करते हैं। साधनों की सीमांत उत्पादकता के आधार पर मुद्रा के रूप में मजदूरी तथा साधनों को पारिश्रमिक का भुगतान किया जाता है।

3. विनिमय का आधार (Basis of exchange)—मुद्रा द्वारा ही वस्तु का विनिमय होता है। उत्पादक अपने व्यय के आधार पर मूल्य लेना चाहते हैं तथा उपभोक्ता सीमांत उपयोगिता के आधार पर मूल्य देना चाहते हैं। मुद्रा द्वारा ही वस्तुओं के मूल्य का निर्धारण होता है। मुद्रा ने विनिमय के कार्य को सुगम बनाया है।

4. वितरण के क्षेत्र में (In the area of distribution)—उत्पादन का कार्य विभिन्न साधनों के सहयोग से होता है। इन साधनों का पुरस्कार मुद्रा के रूप में ही निर्धारित होता है तथा इनका भुगतान भी मुद्रा द्वारा ही किया जाता है।

5. राजस्व के क्षेत्र में (In the area of revenue)—सरकार को करों के रूप में राजस्व की प्राप्ति मुद्रा के रूप में होती है। बजट का निर्माण या सार्वजनिक व्यय मुद्रा के रूप में ही किया जाता है। ऋण, करारोपण तथा घाटे की वित्त-व्यवस्था मुद्रा द्वारा ही संभव होते हैं। राजस्व की विभिन्न क्रियाओं के संपादन में मुद्रा का महत्त्व है।

6. अन्य लाभ (Other benefits)—इन क्षेत्रों में तो मुद्रा से लाभ प्राप्त होता ही है। इनके अलावा भी बहुत-से कार्यों के संपादन में मुद्रा का विशेष महत्त्व है। वे क्षेत्र अग्रलिखित हैं—(क) मुद्रा साख का आधार है। (ख) मुद्रा पूँजी-संचय एवं पूँजी-निर्माण को प्रोत्साहन देती है। (ग) यह विलंबित भुगतान का मापदंड होता है। इन कार्यों के संपादन द्वारा मुद्रा ने आर्थिक विकास, व्यापार एवं व्यवसाय को प्रोत्साहित किया है। (घ) मुद्रा किसी देश की आर्थिक प्रगति का भी ज्ञान प्रदान करती है। (ङ) मुद्रा ने पूँजी तथा तकनीक के हस्तांतरण एवं विदेशी व्यापार को बढ़ावा देकर अंतरराष्ट्रीय सहयोग को भी बढ़ाया है।

प्रोफेसर रॉबर्टसन (Professor Robertson) ने भी मुद्रा के लाभों की चर्चा की है तथा बताया है कि उपभोक्ता को मुद्रा सामान्य क्रयशक्ति प्रदान कर उसे इस लायक बनाती है कि वह अपनी इच्छा के अनुसार सर्वश्रेष्ठ रूप में उसका उपयोग वस्तुओं की खरीद पर कर सके। ("The first great achievement of money is that it enables man as consumer to generalise his purchasing power, and to make his claims on society in the form which suits him best.") उन्होंने यह भी कहा है कि मुद्रा के द्वारा ही हम यह जान पाते हैं कि देश में लोग किस वस्तु को कितनी मात्रा में चाहते हैं। इसके आधार पर ही यह निर्णय लिया जाता है कि किस वस्तु का कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाए तथा सीमित उत्पादक शक्ति का बेहतर प्रयोग किया जा सके। मुद्रा उत्पादकों को बड़े पैमाने पर उत्पादन में, व्यवसायियों को लेन-देन एवं ऋण-भुगतान में सहायता करती है। इस प्रकार, मुद्रा अनेक तरह से हमें लाभ पहुँचाती है। रॉबर्टसन ने मुद्रा से प्राप्त लाभों की विशद व्याख्या अपनी पुस्तक में की है, जिसकी चर्चा लगभग ऊपर की जा चुकी है।

ऊपर के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि मुद्रा से हमें अनेक तरह के लाभों की प्राप्ति होती है। मुद्रा हमारे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सभी क्षेत्रों को प्रभावित करती है तथा सभी क्षेत्रों में इसके लाभ हैं। लेकिन, मुद्रा दोषों से मुक्त नहीं है।

Scanned with CamScanner

मुद्रा के दोष या हानियाँ
(Evils or Disadvantages of Money)

मुद्रा से हमें लाभों की प्राप्ति होती है तथा इसमें अनेक गुण हैं, लेकिन इसमें दोष भी पाए जाते हैं। मुद्रा में आर्थिक, सामाजिक तथा नैतिक सभी तरह के दोष पाए जाते हैं, जिनकी व्याख्या बारी-बारी से प्रस्तुत है।

आर्थिक दोष
(Economic Evils)

1. आर्थिक शक्ति का संकेंद्रण (Concentration of economic power) —मुद्रा से मुद्रा की प्राप्ति होती है, इसलिए बड़े-बड़े पूँजीपतियों तथा उद्योगपतियों के हाथों में आर्थिक शक्ति का संकेंद्रण होता जाता है। वे मजदूरों तथा उपभोक्ताओं का शोषण कर अपने मुनाफा को बढ़ाते जाते हैं। इस प्रकार, देश की आय एवं संपत्ति कुछ बड़े औद्योगिक घराने के हाथों में केंद्रित होती जाती है।

मुद्रा के दोष
1. आर्थिक शक्ति का संकेंद्रण
2. आय तथा धन के असमान वितरण को बढ़ावा
3. व्यापार-चक्र तथा बेरोजगारी
4. अतिपूँजीकरण तथा अतिउत्पादन
5. मुद्रा के मूल्य में स्थायित्व का अभाव
6. सामाजिक मूल्यों में ह्रास
7. श्रमिकों का शोषण
8. शत्रुता
9. भ्रष्टाचार, चोरी-डकैती तथा सामाजिक-नैतिक पतन को बढ़ावा

2. आय तथा धन के असमान वितरण को बढ़ावा (Encourages unequal distribution of income and wealth)—मुद्रा तथा लाभ पर आधारित पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में आय तथा धन का वितरण लगातार असमान तथा विषम बनता जाता है। धनी लोग अपनी मुद्रा के बल पर अधिक धनी बनते जाते हैं जबकि गरीबों की गरीबी बढ़ती जाती है। इस तरह, मुद्रा के कारण आय तथा धन का वितरण विषम होता जाता है।

3. व्यापार-चक्र तथा बेरोजगारी (Trade cycle and unemployment)—मुद्रा की प्राप्ति एवं मुनाफे के उद्देश्य से आर्थिक क्रियाओं का संचालन किया जाता है। लाभ की संभावना रहने पर विनियोग में वृद्धि होती है, आर्थिक क्रियाओं का विस्तार होता है। अर्थव्यवस्था में तेजी (boom) की स्थिति उत्पन्न होती है। लेकिन, जब हानि का डर होता है तब एकाएक विनियोग की मात्रा बहुत घट जाती है, मनुष्य तथा मशीन बेकार हो जाते हैं। आर्थिक क्रियाओं का संकुचन होता है। अर्थव्यवस्था में मंदी (depression) की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तथा बड़े पैमाने पर बेकारी की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

4. अतिपूँजीकरण तथा अतिउत्पादन (Overcapitalisation and overproduction)—अधिक मुद्रा का प्रयोग अतिपूँजीकरण की समस्या पैदा करता है तथा अतिउत्पादन का भय बना रहता है। इसके कारण अनिश्चितता का वातावरण उत्पन्न हो जाता है।

5. मुद्रा के मूल्य में स्थायित्व का अभाव (Lack of stability in the value of money)—मुद्रा की मात्रा बढ़ जाने के कारण मुद्रा के मूल्य में ह्रास होता है। मुद्रास्फीति की समस्या उत्पन्न हो जाती है। मुद्रा के मूल्य में उतार-चढ़ाव दूसरी समस्याओं को भी जन्म देता है। मुद्रास्फीति देश के एक वर्ग के लिए लाभप्रद होती है, तो स्थिर आयवाले लोगों को यह बुरी तरह प्रभावित करती है। इससे समाज में आय तथा धन की विषमता बढ़ती है।

सामाजिक दोष
(Social Evils)

6. सामाजिक मूल्यों में ह्रास (Degradation in social norms and values)—मुद्रा को सर्वशक्तिमान का दर्जा दिया जाता है। मुद्रा से समाज में इज्जत एवं प्रतिष्ठा को जोड़ा जाता है। कम पैसेवाले ईमानदार एवं कुशाग्र लोगों को समाज में उचित प्रतिष्ठा नहीं मिलती। पैसे की पूजा होती है। आज मुद्रा अनुचित कार्यों द्वारा भी कमाई जाए, तो उसे बुरा नहीं माना जाता। यह सामाजिक मूल्यों में ह्रास का द्योतक है।

7. श्रमिकों का शोषण (Exploitation of labourers)—मालिक मुद्रा तथा साधनों के मालिक होने के कारण श्रमिकों का शोषण करता है। उन्हें उचित पारिश्रमिक नहीं दिया जाता।

8. शत्रुता (Enmity)—मुद्रा तथा संपत्ति के कारण सगे भाइयों तक में शत्रुता उत्पन्न हो जाती है। इष्ट-मित्र भी मुद्रा के कारण शत्रु बन जाते हैं, इससे वैमनस्य को बढ़ावा मिलता है।

Scanned with CamScanner

नैतिक दोष
(Moral Evils)

9. भ्रष्टाचार, चोरी-डकैती तथा सामाजिक-नैतिक पतन को बढ़ावा (Encouragement to corruption, theft and dacoity and socio-ethical degradation)—मुद्रा कमाने के लिए आज समाज में लोग कुछ भी करने को तैयार हैं। मुद्रा कमाने के लिए लोग घूसखोरी, भ्रष्टाचार आदि में लिप्त हैं। हत्या और चोरी-डकैती आम बात हो गई है तथा वेश्यावृत्ति को प्रश्रय मिल रहा है। मुद्रा की हवस ने समाज में नैतिक पतन को बढ़ावा दिया है। आज अधिकांश लोगों के लिए पैसा सब कुछ है। (For majority, money is be-all and end-all.) मुद्रा कमाने के तरीके की बात नहीं सोची जाती।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि मुद्रा से जहाँ हमें अनेक लाभ प्राप्त होते हैं, जहाँ मुद्रा ने मानव-जाति की अपार सेवा की है तथा अनेक असुविधाओं से हमें मुक्ति दिलाई है, वहीं यह समाज में अनेक कुरीतियों तथा सामाजिक-नैतिक ह्रास के लिए भी जिम्मेदार है। इसलिए, ठीक ही कहा गया है, "मुद्रा एक अच्छा सेवक है, लेकिन बुरा स्वामी।" ("Money is a good servant but a bad master.") प्रोफेसर रॉबर्टसन (Professor Robertson) ने भी यह विचार व्यक्त किया है, "इस तरह मुद्रा, जो मानव-जाति के लिए अनेक वरदानों का स्रोत है, यदि हम इसे नियंत्रित न करें तो संकट एवं अस्त-व्यस्तता का कारण बन जाती है।" ("Thus money, which is a source of so many blessings to mankind, becomes also, unless we control it, a source of peril and confusion.") अत:, सामाजिक-आर्थिक हितों को ध्यान में रखते हुए मुद्रा पर उचित नियंत्रण आवश्यक हो जाता है, जिससे अस्थिरता, असमानता, सामाजिक एवं नैतिक पतन जैसी समस्याओं को रोका जा सके।

सार-संक्षेप

- मुद्रा की अनेक परिभाषाएँ दी गई हैं। कुछ परिभाषाएँ वर्णनात्मक, कुछ वैधानिक तो कुछ सामान्य-स्वीकृति पर आधारित हैं। विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं, "मुद्रा एक ऐसी वस्तु है जो विनिमय के माध्यम, मूल्य के मापक, ऋणों के भुगतान के साधन एवं मूल्य-संचय के साधन के रूप में नि:संकोच सामान्य रूप से स्वीकार की जाती है।
- **मुद्रा के कार्य**—1. मुख्य कार्य—(i) विनिमय का माध्यम, (ii) मूल्य का मापक, 2. द्वितीयक कार्य—(i) मूल्य का संचय, (ii) विलंबित भुगतान का मानदंड, (iii) मूल्य का हस्तांतरण, 3. आकस्मिक कार्य—(i) राष्ट्रीय आय का वितरण, (ii) सीमांत उपयोगिता तथा सीमांत उत्पादकता में समानता लाना, (iii) साख का आधार, (iv) पूँजी या धन को सामान्य रूप प्रदान करना, 4. अन्य कार्य—(i) शोधन-क्षमता की गारंटी, (ii) मुद्रा तरल संपत्ति के रूप में, (iii) निर्णय का वाहक
- आर्थिक जीवन में मुद्रा का काफी महत्त्व है।
- **मुद्रा के लाभ या गुण**—1. उपभोग के क्षेत्र में, 2. उत्पादकों को लाभ, 3. विनिमय का आधार, 4. वितरण के क्षेत्र में, 5. राजस्व के क्षेत्र में, 6. अन्य लाभ—(क) मुद्रा साख का आधार, (ख) पूँजी-संचय तथा पूँजी-निर्माण को प्रोत्साहन, (ग) विलंबित भुगतान का मापदंड, (घ) आर्थिक प्रगति का सूचक, (ङ) पूँजी और तकनीक के हस्तांतरण द्वारा अंतरराष्ट्रीय सहयोग का प्रोत्साहक
- **मुद्रा के दोष या हानियाँ**—1. आर्थिक शक्ति का संकेंद्रण, 2. आय तथा धन के असमान वितरण को बढ़ावा, 3. व्यापार-चक्र तथा बेरोजगारी, 4. अतिपूँजीकरण तथा अतिउत्पादन, 5. मुद्रा के मूल्य में स्थायित्व का अभाव, 6. सामाजिक मूल्यों में ह्रास, 7. श्रमिकों का शोषण, 8. शत्रुता, 9. भ्रष्टाचार, चोरी-डकैती तथा सामाजिक-नैतिक पतन को बढ़ावा

अभ्यासार्थ प्रश्न

Scanned with CamScanner